अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

द्वितीय अध्याय
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

भूमिका :–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है, साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम है। क्षेत्रीय अध्ययनों में जहाँ उपलब्ध उपकरणों तथा वनीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्त संतुलन का कार्य होता है। समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

साहित्य के पुनरावलोकन के लाभ :–

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है? वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है।
4. पूर्व अनुसंधानों अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
5. सत्यापन करने के लिये कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है। प्रस्तुत समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन इस प्रकार है।

संबंधित साहित्यः–

शिक्षक प्रभावी भूमिका से सम्बन्धित अध्ययन

सिंग और मोहनजी (1996) : ने नौकरी की चिन्ता और नौकरी का स्तर पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य नौकरी का स्तर और नौकरी की चिन्ता के बीच प्रभावी भूमिका संबंध का अध्ययन करना है। इसमें 100 मैनेजर और 100 सुपरवाइजर भिलाई के रिफेक्टोरिश फ्लाट में कार्यरत लोगों पर किया गया।

इस अध्ययन के लिए भूमिका प्रभावी स्केल पारिख और नौकरी चिन्ता स्केल जिस पर भिलाई रिफेक्टोरिश में कार्यरत 200 कर्मचारियो पर न्यादर्श किया गया।

इस अध्ययन का मुख्य परिणाम नकारात्मक पाया गया कि इस अध्ययन ने भूमिका प्रभावी और नौकरी की चिन्ता के बीच नाकारात्मक सम्बन्ध पाया गया। कर्मचारियों में मैनेजर को उनके प्रभावी भूमिका की चिन्ता सुपरवाइजर की तुलना में अधिक पाया गया। अतः परिणाम मिला की नौकरी की चिन्ता और नौकरी के स्तर दोनों प्रभावी भूमिका को प्रभावित करता है।

सेवल (2000) : ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकां में प्रभावी भूमिका और बदलती प्रवृत्ति का अध्ययन किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. माध्यमिक विद्यालय के प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षकों में प्रभावी भूमिका का अध्ययन करना।

2. इस अध्ययन के लिये भोपाल शहर के 16 माध्यमिक विद्यालयों के 124 शिक्षकों को चुना गया। इस अध्ययन के लिये एम.मुखोपध्याय का बदलती प्रवृत्ति परिसूची और उदय पारीक्षा का प्रभावी भूमिका स्केल का उपयोग किया।

3. इस अध्यय का मुख्य निष्कर्ष निम्न है :–

   - अप्रशिक्षित शिक्षक प्रशिक्षित शिक्षक की तुलना में अधिक प्रभावी थे।
   - साल से कम उम्र के शिक्षक की प्रभावी 40 साल से अधिक शिक्षकों से अधिक है।

अरेरा 1988 : ने प्रभावी और अप्रभावी शिक्षक का अध्ययन उनके शैक्षिक योग्यता व्यवसाय अंक नौकरी संतुष्टि सामाजिक आर्थिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि, अभिवृत्ति और कुछ समसामायिक शैक्षिक प्रयोग के आधार पर प्रभावीता और अप्रभाविता का अध्ययन किया। उन्होंने नौकरी संतुष्टि नौकरी चलनशीलता, कार्य कारणी परिस्थिति, स्कूल दूरी वर्तमान कार्य और व्यवसाय के प्रभावी और अप्रभावी शिक्षकों ने अंतर करने के लिये अध्ययन किया गया।

पासी और शर्मा तथा अन्य (1982) : लिंग के आधार पर शिक्षकों की प्रभाविता का अध्ययन किया । इसमें महिला और पुरूष शिक्षकों में उनके शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है। शिक्षक पाँचवा सर्वेक्षण अनुसंधान 1988–19 कोयम्बटूर, सिकर, रंगरामन, एस (1839) ने इस अध्ययन के निम्मालिखित उद्देश्य है।

1. शिक्षकों ने उनके उच्च्य और निम्न वेतन और सामंजस्य के बीच सार्थक स्तर पर अंतर ज्ञात करना।
2. शिक्षकों के उच्च्य और निम्न वेतन और उनके नौकरी का संतुष्टि के बीच सामंजस्य सार्थक स्तर पर अंतर ज्ञात करना।
3. 37 शिक्षकों को दोनों लिंग के आधार कों ही यादृश्यिक विधि द्वारा सम्मिलित किया गया इन्हे अलीगढ़ ए. एम.व्ही. अन्य विद्यालय, अटमालि विद्यालय हरिद्वार से सलेक्ट किया गया।

इस अध्ययन के लिये दो परिस्थिति ने मुख्य न्यादर्श का संकल किया । शोधकर्ता ने अच्छे शिक्षकों का साक्षात्कार लिया, और अच्छे शिक्षकों के लिये अन्य टेस्ट रही रही थे आंकड़ों के विश्लेषण के लिये टी. परिक्षण मानक विचलन और मध्यमान का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के निम्न निष्कर्ष है–

पाँच निम्न वेतन शिक्षक जो वर्ग से सम्मानित में जबकि 13 शिक्षकों में निम्न समायोजन और केवल 1 शिक्षक में औसत समायोजन दिखाई पड़ा। शिक्षकों में बहुत अच्छा, औसत और निम्न तथा बहुत निम्न समायोजन दिखाई पड़ा।

अग्रवाल एम.(1991) : ने माध्यमिक स्तर एवं सेकेण्डरी स्कूल शिक्षकों के एवं संतुष्टि का अध्ययन उनके जाति कार्य स्थन, मातृभाषा के आधार पर किया। पुरूष में स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक महिला शिक्षक अधिक संतुष्ट दिखाई दे रहे थे। आयु और वैवाहिक स्थिति का कार्य संतुष्टि में कोई सम्बंध नही पाया गया। आर्थिक, राजनैतिक मूल्यों को कार्य संतुष्टि से संबन्धित पाया गया।

कलेमेश नायक, जी.,सी, (1990) : ने पाया कि एम.एस.यूनीवर्सिटी, बड़ौदा के सतुलिया शिक्षक अपने कार्य से संतुष्टि में अपनी शिक्षक व्यवसाय के प्रति सकारात्मक भमितृप्ति के कारण।

वैवाहिक स्थिति : आयु, अनुभव, लिंग आदि कार्य संतुष्टि के स्तर को प्रभावित नहीं करती है, समूह लक्ष्य या समूह उद्देश्य शिक्षक के कार्य संतुष्टि को मापने का अच्छा पैरामीटर है लिंग, अनुभव अैर पृष्ठभूमि ये सभी चारों का संबंध कार्य संतृहित नहीं होता है।

राना मोहन बाबू वी. (1972) : के मतानुसार कम अनुभव और शिक्षक के प्रति अनुकूल अभितृप्तमी शिक्षण दक्षत का संबंध उच्च कार्य संतृष्टि से है शिक्षक जो शाला एवं स्वाध्यायी वातावरण मे कार्य करते है, इनमें उच्च कार्य संतुष्टि पायी गयी जबकि शिक्षक जो बंद, वातावरण में कार्य करते है इनमें कम निम्न कार्य संतुष्टि पायी गयी। कार्य संतुष्टि के स्तर पर शारीरिक स्वास्थ्य जीवन और कार्य में तनलीनता का सकारात्मक प्रभाव पड़ना है।

रामाकृष्णा डी. (1930) रेड्डी बी.पी. (1939) : ने अपने में पाया कि उच्च योग्यता धारी माध्यमिक शिक्षा में कम कार्य संतुष्टि थी जबकि युवा शिक्षकों में कार्य संतुष्टि का स्तर अधिक था। जो कार्य सम्मेलन और शिक्षक अथितृप्ति के प्रति सकारात्मक सम्बंध दार्शाता है।

सक्सेना एन (1990) : ने मध्यप्रदेश उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों लिंग और अन्य स्तरों के आधार पर कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया।

निखत वाय शेफ शेफिया (2003) : ने उच्च और निम्न वेतनधारी शिक्षकों का समायोजन तथा कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निम्न उद्देश्य शिक्षकों का उच्च एवं निम्न वेतन धारी समायोंजन सार्थक स्तर पर संबंध ज्ञात करना।

शिक्षकों में उच्च एवं निम्न वेतनधारी का कार्य संतुष्टि से सार्थक स्तर पर सम्बंध ज्ञान करना।

अग्रवाल एस. (1988) : माध्यमिक विद्यालय के अधिक प्रभावी तथा कम प्रभावी शिक्षकों महिला अध्यात्मियों के कार्य समायोजन तथा उच्च कारकों का अध्ययन करना।

समस्या :

माध्यमिक स्तर के अधिक प्रभावी और कम प्रभावी महिला कार्यकर्ताओं के कार्य संतुष्टि और संबंधित अन्य कारकों का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य :

1. अधिक प्रभावी और कम प्रभावी महिला शिक्षक कार्य संतुष्टि का विश्लेषण करना।
2. अधिक प्रभावी महिला अध्यापिकाओं के समायोजन समस्या तथा सम्बंधित करकों की पहचान करना।
3. अप्रभाविका महिला अध्यापक के समायोजन तथा उससे संबंधित अन्य कारकों की पहचान करना।

शोध प्रविधि :

यह सर्वेक्षण विवरणात्मक पद्धति का है 400 महिला शिक्षकों का चयन बरेली शहर के 44 स्कूलों से किया गया । रेटिंग स्कूल शिक्षक प्रभाविता ज्ञान प्राप्त करने के लिए उपयोग किया गाया।

मुख्य निष्कर्ष :—

अधिक प्रभावी और कम प्रभावी महिला शिक्षकों में समायोजन समस्या में सार्थक अंतर था अधिक प्रभावी महिला शिक्षक कम प्रभावी महिला शिक्षक की तुलना में अच्छी तरह समायोजित थी।

अधिक प्रभावी महिला शिक्षकां में संवगैगकि कारक अधिक प्रभावी पाये गये।

अप्रसिद्ध अवस्थी विलय 1939 ने प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध शिक्षकों की पर्सनॉल्टी तथा उनका प्रभावी शिक्षण से ज्ञान से संबंध ज्ञात करना है।

समस्या:—

इस अध्ययन का उद्देश्य प्रसिद्ध तथा अप्रसिद्ध शिक्षकों का पर्सनॉल्टी तथा उसका सम्बंध प्रभावी शिक्षण से ज्ञान प्राप्त करना है।

उद्देश्य :

1. प्रसिद्ध शिक्षकों के पर्सनॉल्टी का कारक का अध्ययन करना।
2. अप्रसिद्ध शिक्षकों के पर्सनॉल्टी कारक का अध्ययन करना।
3. प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध शिक्षकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. प्रसिद्ध शिक्षक के पर्सनॉल्टी कारकों का शिक्षण दक्षता से संबंध ज्ञान करना।

शोध प्रविधिः—

यह स्वतंत्र अध्ययन था जिसमें 99 पुरूष तथा महिला अध्यापकों का चयन कानपुर (उत्तर प्रदेश) ने इन्टरमीडियेट कॉलेज से किया गया था। 80 अध्यापकों पुरूष महिलाओं पर केवल 126 पर्सनॉल्टी कारक तथा वर्मा का 25 रेटिंग स्केल का संचालन किया गया। प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध अध्यापकों का पहचान करने के लिए।

मध्यमान मानक विचलन, की परीक्षण सह—संबंध का उपयोग आंकड़ों के गणना के लिये किया गया।

मुख्य निष्कर्ष :—

शिक्षकों की प्रसिद्धि उनके पर्सनॉल्टी कारकों पर निर्भर करती है जो निम्नानुसार है—

E-	(Sobr)
(E)-	Cons cientious
	(G^+) Slighty tough maundered
	(N^+) Etremdy shrewd
(Q1)	slightly experimenting
(Q2)	Slightly self sufficient
A	Quality's of detachment

उपसंहारः—

उपरोक्त अध्ययनों का अध्ययन करने से पता चलता है कि शिक्षक प्रभाविता के अध्ययन के क्षेत्र में अधिक शोध कार्य नहीं हुऐ है। विभिन्न स्तरों के विद्यालयों के माध्यमिक शिक्षकों की प्रभाविता का अध्ययन किसी शोधकर्ता द्वारा व्यापक पैमाने पर नहीं किया है जो भी अध्ययन कार्य हुये है वे शिक्षकें के प्रभाविता से प्रत्यक्ष रूप से आधारित है।

अतः उपरोक्त शोध को प्रस्तुत शेधकर्ता हेतु आधार बनाया है।